जिन्दगी में उतना तनाव नहीं है जितना हम उसे अपने विचारों से बना देते हैं।

तेवर वही, अंदाज नया .....!
साप्ताहिक

उज्जैन टाइम्स

डाक रजिस्ट्रेशन नं. मालवा डिवीजन-
L2/65/RNP/397/2024-2026

प्रधान सम्पादक : मनमोहन शर्मा

RNI No. 7583/61

● वर्ष : 63, अंक : 37 ● उज्जैन, मंगलवार दिनांक 11-06-2024 से 17-06-2024 तक ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 2 रुपये

नागपुर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत ने चुनाव के दौरान होने वाली बयानबाजी को लेकर बड़ी बात कही है। उन्होंने कहा कि हाल ही में हुए लोकसभा चुनाव के दौरान राजनीतिक दलों ने मर्यादा नहीं रखी। नागपुर में हुए आरएसएस के कार्यक्रम में उन्होंने कहा, असली जनसेवक वही है जो अहंकार नहीं दिखाता और सार्वजनिक जीवन में काम करते हुए भी मर्यादा बनाए रखता है। उन्होंने कहा, चुनाव संपन्न हो गए, परिणाम और सरकार भी बन गई लेकिन उसकी चर्चा अभी तक चल रही है। जो हुआ वह क्यों हुआ। उन्होंने कहा, यह अपने प्रजातांत्रिक देश में पांच वर्ष में होने वाली घटना है जो कि होती है। देश के संचालन के लिए यह महत्वपूर्ण है। लेकिन हम यही चर्चा करते रहें इतना महत्वपूर्ण नहीं है। समाज ने अपना मत दे दिया और उसके अनुसार अब काम हो रहा है। संघ के लोग इसमें नहीं पड़ते। हम अपना कर्तव्य करते रहते हैं।

सच्चा सेवक घमंड नहीं करता, चुनाव प्रचार पर मोहन भागवत की नसीहत, बोले-मर्यादा जरूरी

संघ प्रमुख ने कहा, जो वास्तविक सेवक है उसकी एक मर्यादा रहती है। काम करते सब लोग हैं लेकिन कार्य करते समय वह मर्यादा का पालन भी करता है। जैसा तथागत ने भी बताया है कि कुशलस्य उपसंपदा। शरीर को भूखा नहीं रखना है लेकिन कौशल पूर्वक जीविका कमानी है। इससे दूसरों को धक्का नहीं लगना चाहिए।

यह मर्यादा निहित है। इसी तरह की मर्यादा के साथ हम लोग काम करते हैं। काम करने वाला मर्यादा का ध्यान रखता है। जो मर्यादा का पालन करता है उसमें अहंकार नहीं आता और वही सेवक कहलाने का अधिकारी है।

भागवत ने कहा कि चुनाव में स्पर्धा रहती है इसलिए किसी को पीछा रहने का काम होता है। लेकिन इसमें भी मर्यादा है। असत्य का उपयोग नहीं करना चाहिए। संसद में बैठकर सहमित बनाकर चलाने के लिए चुनाव होते हैं। चित्त अलग-अलग होने के बाद भी साथ ही चलना है। सबका चित्त एक जैसा नहीं हो सकता इसलिए बहुमत का प्रयोग किया जाता है। सिक्के के दोनों पहलू होते हैं इसीलिए संसद में सत्ता और प्रतिपक्ष की व्यवस्था है।

भागवत ने कहा, प्रचार के दौरान मर्यादा का ध्यान नहीं रखा गया। यह भी नहीं सोचा गया कि इससे समाज में मनमुटाव पैदा हो सकता है। बिना कारण संघ को भी इसमें खींचा गया। तकनीक का सहारा लेकर असत्य बातों को प्रसारित किया गया। क्या विद्या और विज्ञान का यही उपयोग है। ऐसे देश कैसे चलेगा। मैं विरोधी पक्ष नहीं प्रतिपक्ष कहता हूं। उसे विरोधी नहीं मानता।उसका भी विचार होना चाहिए। चुनाव लड़ने में मर्यादा का पालन नहीं हुआ।

भागवत ने कहा, सरकार बन गई। वही सरकार फिर से आ गई। 10 सालों में बहुत कुछ अच्छा हुआ। हमारे देश में आर्थिक स्थिति अच्छी हुई। सामरिक स्थिति पहले से अधिक अच्छी है। दुनियाभर में प्रतिष्ठा बढ़ी है। कला और खेल के क्षेत्र में हम सब लोग आगे बढ़े हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि हम चुनौतियों सो मुक्त हो गए हैं। अभी आवेश से मुक्त होकर आगे वाली बातों का विचार करना है।

मणिपुर पर भी बोले मोहन भागवत

मणिपुर को लेकर मोहन भागवत ने कहा कि देश में शांति की जरूरत है। एक साल से मणिपुर शांति की राह देख रहा है। उससे पहले 10 साल एकदम शांत रहा। लेकिन फिर ऐसा लगा कि पुराना जन कल्चर समाप्त हो गया। अचानक वहां उपजी या उपजाई गई कलह अब तक चल रही है। उसका ध्यान कौन देगा। प्राथमिकता देकर उस पर विचार करना चाहिए।

सम्पादकीय

दक्षिणपंथी दलों को मिली कामयाबी

यूरोपीय संघ के चुनाव में इस बार बड़ी उलट-फेर देखने को मिली है। दक्षिणपंथी रुझान वाले दलों को शानदार कामयाबी मिली है। इसे देखते हुए जर्मनी और फ्रांस जैसे देशों के सत्ताधारी दलों की घबराहट बढ़ गई है। हार की आशंका से फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुअल मैक्रों ने तो राष्ट्रीय संसद भंग कर मध्यावधि चुनाव की घोषणा कर दी है। सत्ताईस सदस्य देशों वाले यूरोपीय संघ में जर्मनी सबसे बड़ा देश है। वहां की 'अल्टरनेटिव फार जर्मनी' पार्टी मजबूत होकर उभरी है। हालांकि उसके कई शीर्ष उम्मीदवारों के नाम घोटालों में शामिल थे, मगर उसके बावजूद पार्टी का मत प्रतिशत बढ़ा। पार्टी ने 2019 में ग्यारह फीसद मत हासिल किए थे, जो इस बार बढ़ कर साढ़े सोलह फीसद हो गए। वहीं जर्मनी के सत्तारूढ़ गठबंधन में तीन दलों का संयुक्त मत मुश्किल से तीस फीसद से ऊपर रहा। इस तरह 'अल्टरनेटिव फार जर्मनी' ने देश के चांसलर ओलाफ शोल्ज की 'सोशल डेमोक्रेट्स' पार्टी को मात देने के लिए पर्याप्त सीटें जुटा ली हैं। जर्मनी में दक्षिणपंथ के इस उभार को कुछ लोग हिटलर के नाजी उभार के रूप में देख रहे हैं।

यूरोपीय संघ यूरोप के सत्ताईस देशों का संगठन है, जिसकी संसद के लिए करीब चालीस करोड़ लोग मतदान करते हैं।

यही संसद यूरोपीय देशों की आर्थिक विकास, वाणिज्य-व्यापार, राजनयिक, आप्रवासन आदि से जुड़ी नीतियां तय करती है। इसलिए दुनिया के तमाम देशों की नजर इसके चुनाव पर रहती है।

यूरोपीय संघ में दक्षिणपंथी रुझान वाले दलों का दबदबा बढ़ने से वाणिज्य-व्यापार, आप्रवासन आदि को लेकर कुछ देशों की चिंताएं बढ़ गई हैं। दक्षिणपंथी रुझान वाली सरकारों में देखा गया है कि वे राष्ट्रवादी नीतियों पर अधिक जोर देती हैं। यूरोपीय संघ आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वान डेर लेन की पार्टी 'क्रिश्चियन डेमोक्रेट्स' ने चुनावों से पहले ही दक्षिणपंथी रुझान के उभार को भांप लिया था और प्रवासन और जलवायु के मुद्दे पर और अधिक दक्षिणपंथी रुख अपना लिया था, जिसके कारण यूरोपीय संसद में उनकी पार्टी अब तक की सबसे बड़ी पार्टी बन गई है।

भारत के लिए भी इसे इसलिए चिंता का विषय माना जा सकता है कि उन देशों में बड़ी संख्या में भारतीय नागरिक रोजगार आदि के लिए जाते हैं।

मोदी का तीसरा कार्यकाल, गठबंधन सरकार और चुनौतियां

नई सरकार ने शपथ ले ली है। नई उम्मीदें हैं और चुनौतियां भी बेशुमार हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पिछली दो सरकारों में भाजपा अकेले बहुमत के पार थी। इस बार जबकि राजग लगातार तीसरी बार सत्ता में आई है, भाजपा की घटक दलों पर निर्भरता है, उनके साथ तालमेल बनाकर चलने की चुनौती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपना तीसरा कार्यकाल समझौतावादी जनादेश के साथ शुरू किया है। नतीजतन, मोदी के 72 सदस्यीय नए मंत्रिमंडल में भाजपा के सहयोगियों के 11 मंत्री हैं। साथ ही, देश को मजबूत विपक्ष मिला है। नीतियों को लागू कराने के दौरान सरकार को विपक्ष को साथ लेकर चलना होगा। मजबूत विपक्ष सामने है। इससे विपक्ष और असहमति जताने वाली आवाजों को कुछ राहत मिलेगी। सत्ता और विपक्ष - दोनों के लिए आगे का रास्ता अवसरवादी जोड़-तोड़ की राजनीति नहीं, बल्कि आम लोगों की उम्मीदों और संघर्षों में निहित राजनीति होनी चाहिए। इस स्थिति ने संयमित प्रशासन की उम्मीद जगाई है।

राज्यों में प्रभावी दलों के साथ सत्ता साझा करने से मोल-भाव की गुंजाइश बढ़ जाती है। लेकिन देश के सामने मोदी की सत्ता की मूल प्रकृति सामने है, जो फैसलों में दृढ़ संकल्प वाली है। गठबंधन धर्म इस प्रकृति को लेकर एक गहन विश्लेषण की मांग करेगा। गठबंधन सहयोगियों की राज्य स्तरीय राजनीति के नजरिए से देखा जाए तो कम से कम अगले चरण के विधानसभा चुनावों तक तस्वीर मोदी के पक्ष में है। तेलगुदेसम पार्टी अपने राज्य में आराम से बैठी है। जद

(एकी) को अगले साल विधानसभा चुनावों तक सत्ता में बने रहने के लिए भाजपा की जरूरत है। लोजपा के चिराग पासवान और फिर से उभर रहे राजद की चुनौती सामने है। महाराष्ट्र में एकनाथ शिंदे भाजपा के दम पर मुख्यमंत्री बने हुए हैं। जद (सेकु), रालोद और राकांपा जैसे अन्य गठबंधन सहयोगी अपने फायदे के लिए सौदेबाजी से परे कोई प्रभाव नहीं डाल सकते।

देश में बीते तीन दशकों के आर्थिक उदारीकरण के दौर में लोगों की आकांक्षाओं में वृद्धि हुई है। बीते 10 वर्षों में मोदी सरकार के कार्यक्रमों ने इस वास्तविकता को स्वीकार किया है। विकसित भारत का नारा लोगों के सामने है। लेकिन यह हकीकत भी है कि बुनियादी ढांचे के निर्माण, नए रोजगार पैदा करने, कौशल विकास और लोगों के जीवन स्तर को बेहतर करने जैसे काम अभी शुरू ही हुए हैं। कई मोर्चों पर नीतियां अभी तय हुई हैं। जाहिर है, सामाजिक और आर्थिक चुनौतियां बड़ी हैं। सरकार ने भारतीय अर्थव्यवस्था के अधिकांश बड़ी वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में तेजी से बढ़ने की बात रखी है। इसका चिंताजनक पहलू यह भी है कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था अन्य क्षेत्रों में विकास के साथ कदम मिलाकर नहीं चल पा रही है। मनरेगा योजनाओं पर निर्भरता भी बढ़ी है। स्पष्ट है कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था की सेहत को बहाल करना ही होगा और बुनियादी स्तर पर ही बहुत कुछ किए जाने की जरूरत है। जाहिर है, जनप्रतिनिधियों को चुन कर संसद में भेजने वाला मतदाता उम्मीद करेगा कि लोकतांत्रिक ढांचे में सभी अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाएंगे। बिना किसी राग और द्वेष, भय एवं पक्षपात के।

संचार मंत्रालय के साथ मेरा भावनात्मक लगाव-सिंधिया

नई दिल्ली। संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कार्यभार संभालने के बाद कहा कि इस मंत्रालय के साथ उनका भावनात्मक लगाव है और प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में यह विभाग तरक्की करेगा।

संचार मंत्री के तौर पर कार्यभार संभालने के बाद श्री सिंधिया ने कहा, पिछले 10 सालों में इस मंत्रालय में जो क्रांति आई है, मैं उसे आगे ले जाऊंगा।

यह लोगों को जोड़ने वाला सेवा विभाग है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में यह विभाग तरक्की करेगा। मैं प्रधानमंत्री की उम्मीदों पर खरा उतरने की कोशिश करूंगा। मेरे पास

टेलीकॉम डिविजन के साथ-साथ इंडिया पोस्ट डिविजन की भी जिम्मेदारी है। उनकी बड़ी भूमिका है। मैं दृढ़ संकल्पित हूं और अपना सर्वश्रेष्ठ देने के लिए काम करूंगा। मैंने इससे पहले 2008 में इस मंत्रालय में जूनियर मंत्री के तौर पर काम किया था।

इस विभाग के साथ मेरे जबरदस्त भावनात्मक संबंध हैं।

इसके बाद उन्होंने 'एक्स' पर कहा, एक नयी शुरुआत।

आज प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत सरकार के संचार मंत्री के रूप में कार्यभार सँभालने पर उत्साहित और गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। चलिए, साथ मिलकर एक ऐसे भविष्य का निर्माण करते है।

जहाँ अवसरों की पहुँच कभी भौगोलिक दूरियों पर निर्भर न रहे तथा सुदूर क्षेत्र भी संचार के माध्यम से देश की विकास यात्रा में मुख्य भूमिका निभाएं।

खोयी हुई या गायब की हुई इतिहास की एक झलक

622 ई से लेकर 634 ई तक मात्र 12 वर्ष में अरब के सभी मूर्तिपूजकों को मुहम्मद ने तलवार से जबरदस्ती मुसलमान बना दिया। (मक्का में महादेव काबळेश्वर (काबा) को छोड कर)।

634 ईस्वी से लेकर 651 तक, यानी मात्र 16 वर्ष में सभी पारसियों को तलवार की नोंक पर जबरदस्ती मुसलमान बना दिया।

640 में मिस्र में पहली बार इस्लाम ने पाँव रखे, और देखते ही देखते मात्र 15 वर्ष में, 655 तक इजिप्ट के लगभग सभी लोग जबरदस्ती मुसलमान बना दिये गए।

नार्थ अफ्रीकन देश जैसे अल्जीरिया, ट्यूनीशिया, मोरक्कों आदि देशों को 640 से 711 ई तक पूर्ण रूप से इस्लाम धर्म में जबरदस्ती बदल दिया गया।

3 देशों का सम्पूर्ण सुख चैन जबरदस्ती छीन लेने में मुसलमानों ने मात्र 71 वर्ष लगाए।

711 ईस्वी में स्पेन पर आक्रमण हुआ, 730 ईस्वी तक स्पेन की 70त्न आबादी मुसलमान थी।

मात्र 19 वर्ष में तुर्क थोड़े से वीर निकले, तुर्कों के विरुद्ध जिहाद 651 ईस्वी में आरंभ हुआ, और 751 ईस्वी तक सारे तुर्क जबरदस्ती मुसलमान बना दिये गए।

इण्डोनेशिया के विरुद्ध जिहाद मात्र 40 वर्ष में पूरा हुआ। सन 1260 में मुसलमानों ने इण्डोनेशिया में मारकाट मचाई, और 1300 ईस्वी तक सारे इण्डोनेशियाई जबरदस्ती मुसलमान बना दिये गए।

फिलिस्तीन, सीरिया, लेबनान, जॉर्डन आदि देशों को 634 से 650 के बीच जबरदस्ती मुसलमान बना दिये गए।

सीरिया की कहानी तो और दर्दनाक है। मुसलमानों ने इसाई सैनिकों के आगे अपनी महिलाओ को कर दिया। मुसलमान महिलाये गयीं इसाइयों के पास, कि मुसलमानों से हमारी रक्षा करो। बेचारे मूर्ख इसाइयों ने इन धूर्तो की बातों में आकर उन्हें शरण दे दी। फिर क्या था, सारी सूर्पनखा के रूप में आकर, सबने मिलकर रातों रात सभी सैनिकों को हलाल करवा दिया।

अब आप भारत की स्थिति देखिये

700 ईस्वी में भारत के विरुद्ध जिहाद आरंभ हुआ। वह अब तक चल रहा है। जिस समय आक्रमणकारी ईरान तक पहुँचकर अपना बड़ा साम्राज्य स्थापित कर चुके थे, उस समय उनकी हिम्मत नहीं थी कि भारत के राजपूत साम्राज्य की ओर आँख उठाकर भी देख सकें।

636 ईस्वी में खलीफा ने भारत पर पहला हमला बोला। एक भी आक्रान्ता जीवित वापस नहीं जा पाया।

कुछ वर्ष तक तो मुस्लिम आक्रान्ताओं की हिम्मत तक नहीं हुई भारत की ओर मुँह करके सोया भी जाए। लेकिन कुछ ही वर्षो में गिद्धों ने अपनी जात दिखा ही दी। दुबारा आक्रमण हुआ। इस समय खलीफा की गद्दी पर उस्मान आ चुका था। उसने हाकिम नाम के सेनापति के साथ विशाल इस्लामी टिड्डिदल भारत भेजा।

सेना का पूर्णतः सफाया हो गया, और सेनापति हाकिम बन्दी बना लिया गया। हाकिम को भारतीय राजपूतों ने मार भगाया और बड़ा बुरा हाल करके वापस अरब भेजा, जिससे उनकी सेना की दुर्गति का हाल, उस्मान तक पहुँच जाए।

यह सिलसिला लगभग 700 ईस्वी तक चलता रहा। जितने भी मुसलमानों ने भारत की तरफ मुँह किया, राजपूत शासकों ने उनका सिर कन्धे से नीचे उतार दिया।

उसके बाद भी भारत के वीर जवानों ने पराजय नही मानी। जब 7 वीं सदी इस्लाम की आरंभ हुई, जिस समय अरब से लेकर अफ्रीका, ईरान, यूरोप, सीरिया, मोरक्कों, ट्यूनीशिया, तुर्की यह बड़े बड़े देश जब मुसलमान बन गए, भारत में महाराणा प्रताप के पूर्वज बप्पा रावल का जन्म हो चुका था।

वे अद्भुत योद्धा थे, इस्लाम के पञ्जे में जकड़ कर अफगानिस्तान तक से मुसलमानों को उस वीर ने मार भगाया। केवल यही नहीं, वह लड़ते लड़ते खलीफा की गद्दी तक जा पहुँचे। जहाँ स्वयं खलीफा को अपनी प्राणों की भिक्षा माँगनी पड़ी।

उसके बाद भी यह सिलसिला रुका नहीं। नागभट्ट प्रतिहार द्वितीय जैसे योद्धा भारत को मिले। जिन्होंने अपने पूरे जीवन में राजपूती धर्म का पालन करते हुए, पूरे भारत की न केवल रक्षा की, बल्कि हमारी शक्ति का डंका विश्व में बजाए रखा।

पहले बप्पा रावल ने पुरवार किया था, कि अरब अपराजित नहीं है। लेकिन 836 ई के समय भारत में वह हुआ, कि जिससे विश्व विजेता मुसलमान थर्रा गए।

सम्राट मिहिरभोज प्रतिहार ने मुसलमानों को केवल 5 गुफाओं तक सीमित कर दिया। यह वही समय था, जिस समय मुसलमान किसी युद्ध में केवल विजय हासिल करते थे, और वहाँ की प्रजा को मुसलमान बना देते।

भारत वीर राजपूत मिहिरभोज ने इन आक्रांताओ को अरब तक थर्रा दिया। पृथ्वीराज चौहान तक इस्लाम के उत्कर्ष के 400 वर्ष बाद तक राजपूतों ने इस्लाम नाम की बीमारी भारत को नहीं लगने दी। उस युद्ध काल में भी भारत की अर्थव्यवस्था अपने उत्कृष्ट स्थान पर थी। उसके बाद मुसलमान विजयी भी हुए, लेकिन राजपूतों ने सत्ता गंवाकर भी पराजय नही मानी, एक दिन भी वे चैन से नहीं बैठे।

अन्तिम वीर दुर्गादास जी राठौड़ ने दिल्ली को झुकाकर, जोधपुर का किला मुगलों के हाथो ने निकाल कर हिन्दू धर्म की गरिमा, को चार चाँद लगा दिए।

किसी भी देश को मुसलमान बनाने में मुसलमानों ने 20 वर्ष नहीं लिए, और भारत में 800 वर्ष राज करने के बाद भी मेवाड़ के शेर महाराणा राजसिंह ने अपने घोड़े पर भी इस्लाम की मुहर नहीं लगने दी।

महाराणा प्रताप, दुर्गादास राठौड़, मिहिरभोज, रानी दुर्गावती, अपनी मातृभूमि के लिए जान पर खेल गए।

एक समय ऐसा आ गया था, लड़ते लड़ते राजपूत केवल 2 प्रति. पर आकर ठहर गए। एक बार पूरा विश्व देखें, और आज अपना वर्तमान देखें। जिन मुसलमानों ने 20 वर्ष में विश्व की आधी जनसंख्या को मुसलमान बना दिया, वह भारत में केवल पाकिस्तान बांगलादेश तक सिमट कर ही क्यों रह गए?

राजा भोज, विक्रमादित्य, नागभट्ट प्रथम और नागभट्ट द्वितीय, चन्द्रगुप्त मौर्य, बिन्दुसार, समुद्रगुप्त, स्कन्द गुप्त, छत्रसाल बुन्देला, आल्हा उदल, राजा भाटी, भूपत भाटी, चाचादेव भाटी, सिद्ध श्री देवराज भाटी, कानड़ देव चौहान, वीरमदेव चौहान, हठी हम्मीर देव चौहान, विग्रह राज चौहान, मालदेव सिंह राठौड़, विजय राव लाँझा भाटी, भोजदेव भाटी, चूहड़ विजयराव भाटी, बलराज भाटी, घड़सी, रतनसिंह, राणा हमीर सिंह और अमर सिंह, अमर सिंह राठौड़, दुर्गादास राठौड़, जसवन्त सिंह राठौड़, मिर्जा राजा जयसिंह, राजा जयचंद, भीमदेव सोलङ्की, सिद्ध श्री राजा जय सिंह सोलङ्की, पुलकेशिन द्वितीय सोलङ्की, रानी दुर्गावती, रानी कर्णावती, राजकुमारी रतनबाई, रानी रुद्रा देवी, हाड़ी रानी, रानी पद्मावती, जैसी अनेको रानियों ने लड़ते-लड़ते अपने राज्य की रक्षा हेतु अपने प्राण न्योछावर कर दिए। अन्य योद्धा तोगा जी वीरवर कल्लाजी जयमल जी जेता कुपा, गोरा बादल राणा रतन सिंह, पजबन राय जी कच्छावा, मोहन सिंह मँढाड़, राजा पोरस, हर्षवर्धन बेस, सुहेलदेव बेस, राव शेखाजी, राव चन्द्रसेन जी दोड़, राव चन्द्र सिंह जी राठौड़, कृष्ण कुमार सोलंकी, ललितादित्य मुक्तापीड़, जनरल जोरावर सिंह कालुवारिया, धीर सिंह पुण्डीर, बल्लू जी चम्पावत, भीष्म रावत चुण्डा जी, रामसाह सिंह तोमर और उनका वंश, झाला राजा मान, महाराजा अनङ्गपाल सिंह तोमर, स्वतंत्रता सेनानी राव बख्तावर सिंह, अमझेरा वजीर सिंह पठानिया, राव राजा राम बक्श सिंह, व्हाट ठाकुर कुशाल सिंह, ठाकुर रोशन सिंह, ठाकुर महावीर सिंह, राव बेनी माधव सिंह, भुरजी, बलजी, जवाहर जी, छत्रपति शिवाजी। ऐसे हिन्दू योद्धाओं का संदर्भ हमें हमारे इतिहास में तत्कालीन नेहरू-गाँधी सरकार के शासन काल में कभी नहीं पढ़ाया गया। पढ़ाया ये गया, कि अकबर महान बादशाह था। फिर हुमायूँ, बाबर, औरंजेब, ताजमहल, कुतुब मीनार, चारमीनार आदि के बारे में ही पढ़ाया गया। अगर हिन्दू संगठित नहीं रहते, तो आज ये देश भी पूरी तरह सीरिया और अन्य देशों की तरह पूर्णतया मुस्लिम देश बन चुका होता।

ये सुंदर विश्लेषण जानकारी हिंदू समाज तक पहुंचना अनिवार्य है। हर वर्ग और समाज में वीरों की गाथाओं को बताकर उन्हें गर्व की अनुभूति करानी चाहिए।

हमारे नेताओं को अपने गांव में भी नहीं मिले वोट, शिवकुमार बोले-रिजल्ट कांग्रेस के लिए खतरे की घंटी

लोकसभा चुनाव में 99 सीट लाकर दूसरे नंबर पर रही कांग्रेस पार्टी के आंकड़ों पर राहुल गांधी, मल्लिकार्जुन खरगे समेत दिग्गज नेता भले ही खुश हों लेकिन, कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार ने चुनाव में कांग्रेस के प्रदर्शन पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा कि परिणाम कांग्रेस के लिए खतरे की घंटी है। हमारे नेताओं को अपने गांवों में भी वोट नहीं मिले। कर्नाटक में सत्ता पर होने के बावजूद कांग्रेस के खाते में 28 में से सिर्फ 9 सीटें आई। डीके ने आगे कहा कि सुधार और आत्ममंथन की आवश्यकता है। हालिया संपन्न हुए आम चुनाव के परिणामों को चेतावनी की घंटी बताते हुए डीके शिवकुमार ने कहा कि सुधार की बहुत आवश्यकता है। अफने आवास पर पत्रकारों से बात करते हुए शिवकुमार ने कहा, हम सभी नेताओं के साथ समीक्षा बैठकें करेंगे। यह आत्मनिरीक्षण करने और सुधार करने का समय है। परिणाम हमारे लिए खतरे की

घंटी हैं। उन्होंने कहा कि राज्य भर के निर्वाचन क्षेत्रों के लिए समीक्षा बैठकों की योजना बनाई गई है। उन्होंने कहा कि इन बैठकों की तारीखों की घोषणा जल्द ही की जाएगी।

हमारे नेताओं को अपने गांव में ही वोट नहीं मिले

कर्नाटक और हिमाचल प्रदेश के नतीजों पर शिवकुमार ने कहा, हमें 14-15 सीटें जीतने का भरोसा था, लेकिन हम इन आंकड़ों को हासिल करने में विफल रहे। हमें लोगों के फैसले को स्वीकार करना होगा। पार्टी के नेताओं को अपने ही गांव-कस्बों से वोट नहीं मिले, यह चिंता की बात है।

हार के लिए कौन जिम्मेदार?

हार के लिए विधायकों को जिम्मेदार ठहराने वाले कुछ मंत्रियों की टिप्पणियों पर शिवकुमार ने कहा, किसी ने भी मुझसे इसकी शिकायत नहीं की है। आरोप-प्रत्यारोप का कोई मतलब नहीं है। जो नेता निर्वाचन क्षेत्रों के प्रभारी हैं, उन्हें पार्टी कार्यकर्ताओं से बात करनी चाहिए, कारणों की जांच करनी चाहिए।

उन्होंने विधायक बसवराज शिवगंगा के एक बयान का जिक्र करते हुए सलाह दी कि विधायकों को अनावश्यक रूप से सार्वजनिक रूप से बयान जारी नहीं करना चाहिए। उन्हें पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ बैठकर समस्या पर चर्चा करनी चाहिए।

देश की सबसे कठिन परीक्षा में भी धांधली

राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (नीट) देश की सबसे कठिन परीक्षाओं में से एक है। ठीक हमारे स्वास्थ्य क्षेत्र की रीढ़ की हड्डी की तरह, लेकिन इन क्षेत्रों में पेपर लीक होते हैं। इस बार 67 छात्रों ने 720 अंक हासिल किए, यह पूरी तरह असंभव है। पिछले साल तीन छात्रों ने 720 अंक हासिल किए थे।

इस परीक्षा में कथित तौर पर गड़बड़ियों को लेकर इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के जूनियर डॉक्टर्स नेटवर्क ने सवाल उठाते हुए सीबीआई जांच की मांग की हैं। आईएमए जूनियर डॉक्टर्स ने आज ही राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (एनटीए) के अध्यक्ष प्रदीप कुमार जोशी को पत्र लिख कर सभी छात्रों के लिए निष्पक्ष और पारदर्शी मूल्यांकन प्रक्रिया सुनिश्चित करने के लिए पुनः परीक्षा का भी अनुरोध किया।

क्या यह देश का सबसे बड़ा परीक्षा घोटाला है? छह छात्रों के सीट नंबर एक ही क्रम से हैं। दो छात्रों ने 718 और 719 अंक हासिल किए हैं, यह पूरी तरह असंभव है। नीट परीक्षा में 180 प्रश्न होते हैं। प्रत्येक प्रश्न के चार अंक होते हैं। यदि कोई एक प्रश्न गलत करता है तो उसके अंक 715 और 716 के आसपास होने चाहिए। यह पूरी तरह से घोटाला है लेकिन नीट इसे नजरअंदाज करने जा रही है? सीरियल नंबर 62 से 69 तक के छात्रों के लिए केंद्र कोड एक ही है। नीट 2024 में ग्रेस मार्क्स एक और घोटाला है। क्या सभी टॉपर परीक्षा देने के लिए एक ही केंद्र पर जाते हैं? दाल में कुछ काला और पूरी दाल ही काली है? हर छात्र को निष्पक्ष मौका मिलना चाहिए, कट-ऑफ में यह भारी वृद्धि स्पष्ट रूप से बड़े पैमाने पर पेपर लीक का संकेत देती है।

एनटीए द्वारा सबसे अधिक संभावना एक बड़ी प्रोग्रामिंग त्रुटि है जिसमें उन्होंने ओएमआर प्रतिक्रिया पत्रक के आधार पर अंकों का गलत मूल्यांकन किया है। छात्र 718, 719 अंक प्राप्त नहीं कर सकते हैं। पूर्ण अंक 720 हैं। प्रत्येक सही के लिए, आपको 4 मिलता है और प्रत्येक गलत के लिए आपको -1 मिलता है। इसलिए, यदि कोई छात्र- सभी 180 प्रश्न सही करता है, तो उसे 720 अंक मिलते हैं जो प्राप्त करने योग्य है। 1 गलत, 179 सही, उसे 715 मिलते हैं। 0 गलत, 179 सही, उसे 716 मिलते हैं तो, 718,719 कैसे प्राप्त किया जा सकता है? ऐसा करने का एकमात्र तरीका यह है कि वे -5 के बजाय प्रत्येक गलत प्रश्न के लिए-1 प्रदान करें। ऐसे में हम भूल रहे हैं कि इस साल नीट में कितना बड़ा घोटाला हुआ है?

और आश्चर्य की बात है कि हर कोई इसके बारे में चुप है, सिर्फ इसलिए क्योंकि एनटीए एक विश्वसनीय केंद्रीय एजेंसी है? एक छात्र को 720/720 स्कोर करने के बाद भी एम्स दिल्ली में मौका नहीं मिल रहा है? क्या यह किसी तरह की लापरवाही है? परिणाम 14 जून के बजाय 4 जून (चुनाव परिणाम दिवस) को क्यों घोषित किए गए? कुछ गड़बड़ है, लाखों नीट उम्मीदवार इसका उत्तर चाहते हैं, इसके लिए कौन जिम्मेदार है? यह अपराध है कि एनटीए लाखों छात्रों के करियर के साथ खिलवाड़ कर रहा है। यह बिलकुल स्पष्ट है कि नीट पेपर लीक के कारण विनाशकारी परिणाम सामने आए हैं। और चुनाव नतीजों की शाम को नतीजे जारी करने का यह विचार सिर्फ मामले को दबाने की कोशिश का एक और तरीका है।

स्कूल बोर्ड भी इससे अछूते नहीं दिखते। अनुचित साधनों के इस्तेमाल, कदाचार, धोखाधड़ी और पेपर लीक के कारण कक्षा 10 और कक्षा 12 की बोर्ड परीक्षाएं भी प्रभावित हुईं।लोग यह नहीं समझते कि 2016 में #CBSE द्वारा पेपर लीक और घोटालों के कारण ही पुनः नीट आयोजित किया गया था, इसे 2024 में फिर से क्यों नहीं आयोजित किया जा सकता है? साथ ही एक जगह नहीं, बहुत जगहों पर पेपर लीक हुआ है, 5 मई से पहले पेपर सर्कुलेट हो रहा था टेलीग्राम पर। जिसे एनटीए ने नहीं स्वीकारा। कितने लोगों ने ऑनलाइन ही देख लिया था? उनको कैसे पहचानेंगे पुनर्मूल्यांकन से? हम केवल 700-720 अंक लाने वाले लोगों के घोटालों के बारे में जानते हैं, हम नहीं जानते कि कम अंकों के लिए ऐसी कितनी गलतियाँ हैं?

इस साल परीक्षा पेपर लीक के कई मामलों ने एक बार फिर देश की शिक्षा व्यवस्था और सार्वजनिक परीक्षा प्रणाली की नींव हिलाकर रख दी है। सबसे बड़ी मेडिकल प्रवेश परीक्षा, सहश्वश्वज्ञत2024 से लेकर राज्य स्तरीय भर्ती परीक्षाओं तक, कई परीक्षाओं में गड़बड़ी की गई है, जिससे उन लोगों के लिए निष्पक्षता और न्याय पर एक वैध सवाल खड़ा होता है, जिन्होंने परीक्षा पास करने के लिए किसी भी अनुचित तरीके का सहारा नहीं लिया।

लोकसभा में पारित विधेयक में विभिन्न अनुचित साधनों में लिप्त व्यक्तियों, संगठित समूहों या संस्थाओं को कानूनी रूप से रोकने का भी प्रावधान है। सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) विधेयक, 2024 पारित किया, जिसमें इसे गैर-जमानती अपराध घोषित किया गया, जिसके लिए न्यूनतम 3 वर्ष और अधिकतम पांच वर्ष कारावास की सजा और 10 लाख रुपये का जुर्माना है। फिर भी, विभिन्न परीक्षाओं के पेपर लीक मामले और उत्तर कुंजी कथित तौर पर व्हाट्स ऐप, एक्स (पूर्व ट्विटर), फेसबुक जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर प्रसारित हो रहे थे। कदाचार, प्रतिरूपण और पेपर लीक के मामलों के कारण परिणाम घोषणा और भर्ती में देरी हो रही है, जिससे परीक्षाएं रद्द हो रही हैं। इससे बड़ी संख्या में विद्यार्थियों और स्नातकों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

रियासी हमले के पीछे खतरनाक आतंकी अबू हमजा का हाथ?

हाल ही में जम्मू-कश्मीर पुलिस ने तीन विदेशी आतंकवादियों की तस्वीरें जारी की थीं जो कि राजौरी पुंछ इलाके में ही ऐक्टिव थे। ये सभी आतंकवादी लश्कर से जुड़े थे। इसमें से पहले का नाम अबू हमजा बताया गया था जो कि लश्कर का टॉप कमांडर था। इसके अलावा दूसरे की पहचान फौजी के रूप में हुई जो कि पाकिस्तानी सेना में भी कमांडो रह चुका है। तीसरे की पहचान आदुन के रूप में हुई थी जो कि इस रीजन में एक साल से ऐक्टिव था।

सुरक्षाबलों के सूत्रों के मुताबिक संभावना है कि रियासी में श्रद्धालुओं की बस पर हमला करने वाले आतंकी इनमें से से ही हों। हालांकि इस बात की पुष्टि नहीं की गई है। अबू हमजा एक पाकिस्तानी आतंकी है और उसकी उम्र 32 साल के करीब है। उसपर भारत में 10 लाख रुपये का इनाम रखा गया है। सूत्रों के मुताबिक एलओसी से ही घुसपैठ करके वह जम्मू रीजन में पहुंचा। वह हाल में हुए कई आतंकी हमलों का जिम्मेदार है।

जम्मू-कश्मीर पुलिस ने कहा था कि 4 जून को वायुसेना के काफिले पर हुए हमले के लिए अबू हमजा ही जिम्मेदार था। 22 अप्रैल को एक सरकारी कर्मचारी की हत्या भी उसने ही करवाई थी। एजेंसियों का कहना है कि अबू हमजा की ट्रेनिंग पाकिस्तानी सेना ने ही करवालई है। इसके बाद वह एक और आतंकी के साथ घुसपैठ करके भारत आ गया। सुरक्षा बल लंबे समय से इन आतंकियों की तलाश कर रहे हैं। इस इलाके में घने जंगल और पहाड़ियां हैं। ऐसे में ये आतंकी घात लगाकर हमला कर देते हैं। इन आतंकियों का जम्मू-कश्मीर में मौजूद रहना सुरक्षाबलों के लिए सिरदर्द बना हुआ है। बीते दिनों जम्मू-कश्मीर के डीजीपी आरआर स्वैन ने कहा था कि कम से कम 70 से 80 विदेशी आतंकी घाटी में सक्रिय हैं। रियासी में शिव खोड़ी से लौट रही एक बस पर आतंकियों ने गोलीबारी कर दी थी। ड्राइवर को गोली लगने के बाद बस खाईं में गिर गई। आतंकी इसके बाद भी गोलीबारी करते रहे। इस आतंकी घटना में 9 लोगों की मौत हो गई और 33 लोग घायल हो गए।

नाले पर किए गए अतिक्रमण को निगम ने हटाया

उज्जैन। बरसात के पूर्व उज्जैन शहर अंतर्गत समस्त नालों की सफाई का कार्य निगम द्वारा किया जा रहा है सोमवार को कलेक्टर टीएल बैठक के प्राप्त निर्देश के क्रम में निगम आयुक्त श्री आशीष पाठक द्वारा समस्त कार्यपालन यंत्री, भवन अधिकारी, जोनल अधिकारी, भवन निरीक्षक को निर्देशित किया गया कि नालों के ऊपर जितने भी अवैध अतिक्रमण एवं निर्माण कार्य किए गए हैं जिसके कारण नालों की सफाई व्यवस्था बाधित होती है साथ ही बारिश के दौरान जल भराव की स्थिति निर्मित होती है ऐसे समस्त अतिक्रमणों को हटाने की कार्यवाही की जाए।

निगम आयुक्त श्री आशीष पाठक द्वारा दिए गए निर्देश के क्रम में जोन क्रमांक 5 बस स्टैंड से लेकर संख्याराजे धर्मशाला तक बरसों पुरानी जमी दुकानें जिनके द्वारा नालों के ऊपर अतिक्रमण किया गया था जिन्हें हटाने की कार्यवाही नगर निगम द्वारा पुलिस प्रशासन के सहयोग से की गई। इसी प्रकार झोन क्र. 6 अन्तर्गत नागझिरी क्षैत्र अन्तर्गत भी नाले पर किये गए अतिक्रमण को हटाया गया।

उक्त कार्रवाई स्वास्थ्य विभाग के उपायुक्त श्री संजेश गुप्ता, कार्यपालन यंत्री श्री राकेश गुप्ता, श्री जगदीश मालवीय, झोनल अधिकारी श्री दीपक शर्मा, श्री डी एस परिहार, स्वास्थ्य अधिकारी, स्वास्थ्य निरीक्षक एवं उपयंत्री उपस्थित में की गई।

गौतस्करी के विरोध में विहिप, बजरंग दल ने प्रदर्शन किया

उज्जैन। बढ़ती गौतस्करी को दृष्टिगत रखते हुए क्षेत्र गौरक्षा विभाग की योजनानुसार संपूर्ण प्रदेश के समस्त जिलो में 19 सूत्रीय माँग के साथ मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन जिलाधीश को दिया गया।

इसी क्रम में उज्जैन में भी विहिप बजरंग दल द्वारा गौमाता के संरक्षण हेतु प्रदर्शन करते हुए कहा कि पुण्यभूमि भारत जहाँ दुध की नदियां बहती थी वहाँ एक ओर युवा पीढ़ी कुपोषण से ग्रस्त और दूसरी ओर गौतस्कर के हौसले बुलंद हैं।

गौतस्कारों के समक्ष प्रशासन एवं पुलिस प्रशासन की कानून व्यवस्था ध्वस्त है। विहिप जिला सहमंत्री गोविंद आहुजा के अनुसार विगत कुछ माह से प्रायः देखने में आ रहा है कि मध्यप्रदेश में गौतस्करी निरंतर वृद्धि के साथ हो रही है, विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल निरंतर इस निंदनीय कृत्य पर अंकुश लगाने हेतु प्रयासरत हैं।

इस दौरान गौरक्षा विभाग उज्जैन द्वारा भी ज्ञापन दिया गया जिसमें महामण्डलेश्वर श्री ज्ञानदासजी महाराज, प्रांत मंत्री विनोद शर्मा, प्रांत गौरक्षा प्रमुख महेंद्र सिंह डोडिया, विभाग मंत्री विष्णु पाटीदार, विभाग संयोजक प्रीतम बैरागी, विभाग गौरक्षा प्रमुख जसवंत सिंह ठाकुर, विभाग सह गौरक्षा प्रमुख ओम सिंह पाठक, विभाग प्रचार-प्रसार प्रमुख मनीष रावल, विभाग धर्माचार्य प्रमुख पिंटू कौशल, भारत सिंह तंवर, उज्जैन जिलाध्यक्ष महेश तिवारी, जिला उपाध्यक्ष महेश कुमावत, जिला कोषाध्यक्ष संतोष धामानी, जिला संयोजक ऋषभ कुशवाह, जिला गौरक्षा प्रमुख राकेश कटारिया, शशांक सेन, उज्जैन जिला ग्रामीण अध्यक्ष नारायण सिंह पंवार, मंत्री नागेश्वर राठौर, मनोहर आंजना, नागदा जिलाध्यक्ष ओजस सोलंकी, जिलामंत्री जितेंद्र पांचाल, संयोजक विशाल सिंह, गौरक्षा प्रमुख प्रदीप पाटीदार, मातृशक्ति विभाग संयोजिका लता चौहान, मातृशक्ति जिला संयोजिका मुस्कान त्रिवेदी दुर्गावाहिनी जिला संयोजिका अंजु रावल, मोहन जायसवाल, रमेश पांडे, धर्मेंद्र जोशी, रवि शर्मा, दर्शन परमार, पंकज जाटव, पुरूषोत्तम पटेल, विशाल गुर्जर, लवेश सोनी, संस्कार श्रीवास, अंकित ठाकुर, जितेंद्र राजपूत, अमन चौरसिया, विनय राठौर, चिराग कुमार, राज श्रीवास, राकेश माली, दीपक सूर्यवंशी, सौरभ सेन, दीपक ठाकुर, गौतम परमार, किशोर लक्खा, पवन वर्मा, अक्षय दुबे, हरीश प्रजापति, सोनू शर्मा, गोपाल बैरागी, विक्की राठौर, कौशलदास बैरागी, आदि पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता गण उपस्थित रहें।

नेशनल एशोसियेशन ऑफ पोस्टल ईम्प्लोयीज ग्रुप सी का सिल्वर जुबली अधिवेशन प्रारंभ

उज्जैन। रामघाट स्थित झालरिया मठ में नेशनल यूनियन का रजत जयंती आल इंडिया अधिवेशन का भव्य शुभारम्भ किया गया । कार्यक्रम में मध्य प्रदेश परिमंडल की पोस्टमास्टर जनरल प्रीती अग्रवाल एवं शिवाजी रेड्डी ने माँ शारदा के चित्र पर माल्यार्पण दीप प्रज्ज्वलित कर की। कार्यक्रम में संगठन के सेक्रेटरी जनरल शिवाजी वसई रेड्डी ने संगठन की विगत दो वर्षों में किये गए कार्यों की जानकारी दी।

कार्यक्रम में प्रीती अग्रवाल द्वारा डाक विभाग के कर्मचारी अधिकारी के द्वारा भारत सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के सफल संचालन में किये जा रहे योगदान के बारें में बताया एवं कोरोना काल में विभाग के द्वारा घर घर दवाइयों के वितरण (पार्सल द्वारा) एवं एईपीएस के द्वारा नकद भुगतान की सेवाओं में कर्मचारिओं के योगदान की प्रशंसा की।

उक्त कार्यक्रम में प्रवर अधीक्षक डाकघर मालवा संभाग, उज्जैन थी एस के ठाकरे एवं सहायक निदेशक इंदौर क्षेत्र, इंदौर प्रवीण श्रीवास्तव, डी किशनराव पूर्व जनरल सेक्रेटरी एनएपीई, सुनील जुनोरिया अध्यक्ष एफएनपीओ, एन के त्यागी जनरल सेक्रेटरी आरएमएस, निशार मुजावर पोस्टमैन, बी शिवकुमार पूर्व सेक्रेटरी जनरल एफएनपीओ पी एस बाबु पूर्व जनरल सेक्रेटरी एनएपीई एवं रजत दास पूर्व अध्यक्ष एनएपीई प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

उक्त अधिवेशन में भारतीय डाक विभाग के 22 सर्किल के 400 संभागो के 1200 से अधिक कर्मचारी उपस्थित हुए। कार्यक्रम का आयोजन नेशनल एशोसियेशन ऑफ़ पोस्टल ईम्प्लोयीज ग्रुप सी मालवा संभाग, उज्जैन द्वारा किया जा रहा है।

कार्यक्रम हेतु उज्जैन में 900 एसी रूम में पधारे कर्मचारियो एवं संगठन के सदस्यों को रुकवाया गया। उक्त कार्यक्रम में उद्घाटन भाषण संभागीय सचिव अनिल कौशल द्वारा दिया गया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में अब्दुल फरीद कुरैशी, रविन्द्र शर्मा, संभागीय अध्यक्ष-धीरेन्द्र सिंह राठौर, बरिष्ठ उपाध्यक्ष मुकेश कुम्भकार, महेश कश्यप, गोपाल गरेठिया, शांतनु श्रीवास्तव, पवन पाटीदार, राहुल अग्रवाल, गोपाल रायकवार, डी सी गोयल, अश्विन मसीह, प्रीतम सोनी, मनोज शर्मा, श्रीमती कीर्ति वास्तव, श्रीमती शन्नो मेहता, कु शीवा खान, श्रीमती अन्जुवाला, एस एल सोनी, एस सी जोशी, डी पी शर्मा, बी एच शर्मा आदि का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम 3 दिवसीय दिनांक 09 से 11 जून 2024 तक रखा गया है। जिसमे डाक विभाग के कर्मचारियो की समस्या एवं विभाग की चुनौतियों आदि विषय पर चर्चा की जाएगी। उक्त कार्यक्रम का संचालन अब्दुल फरीद कुरैशी द्वारा किया गया।

निगम कर रहा नालों की सफाई

उज्जैन। वर्षाकाल को दृष्टिगत रखते हुए उज्जैन शहर के समस्त छोटे एवं बड़े नालों की सफाई का कार्य निगम आयुक्त श्री आशीष पाठक के निर्देश अनुसार किया जा रहा है, शहर में 120 से अधिक की संख्या में छोटे नाले एवं बड़े नालों की सफाई का कार्य पूर्णता की ओर है निगम द्वारा निरंतर पोकलेन, जेसीबी, डंपर ट्रैक्टर ट्राली के माध्यम से नालों की सफाई का कार्य संपादित किया जा रहा है जहां संसाधन का उपयोग कर सफाई कार्य किया जा सकता वहां नाला गैंग के सफाई मित्रों द्वारा नालों के अंदर उतरकर कचरे को बाहर करते हुए सफाई कार्य किया जा रहा है निगम आयुक्त श्री आशीष पाठक द्वारा नाला गैंग के कर्मचारी का मनोबल बढ़ाते हुए कर्मचारियों द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की गई साथ ही स्वास्थ्य विभाग के उपायुक्त श्री संजेश गुप्ता को निर्देशित किया गया कि ऐसी गहरी एवं बड़े नालों में सफाई मित्रों द्वारा जब सफाई कार्य संपादित किया जाता है तब पूर्ण सुरक्षा एवं सफाई के उपकरणों का ध्यान रखा जाए, रामघाट पर भी चौंबरों की सफाई का कार्य किया जा रहा है जहां जो कर्मचारी चेंबर में उतर रहे हैं वह पूर्ण रूप से सुरक्षा उपकरण पीपीई कीट एवं ऑक्सीजन का सिलेंडर पहनकर ही कार्य संपादित कर रहे हैं।

तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने पर भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा ने मिठाई वितरण कर खुशी मनाई

उज्जैन। नरेंद्र मोदी भारत के लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने पर। प्रधानमंत्री के शपथ ग्रहण कार्यक्रम होने के बाद खुशी में भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा के नगर जिलाध्यक्ष जनाब शेर अली भाई के नेतृत्व में तोपखाना स्थिति मेन रोड पर राहगीर व स्थानीय नागरिकों को मिठाई बांटकर खुशी मनाई।

इस अवसर पर मोर्चा के नगर जिला महामंत्री एवं उज्जैन उत्तर लोकसभा चुनाव प्रभारी सलीम अहमद नगर जिला महामंत्री एवं उज्जैन दक्षिण लोकसभा प्रभारी अकील खान, नगर उपाध्यक्ष बाबर खान, नगर मंत्री वाजिद अली शाह, सहकोषाध्यक्ष नासिर भाई राईन, डॉ. आसिफ नागोरी, फिरोज खान, मंडल अध्यक्ष अब्दुल वाहिद नागोरी, मुजफ्फर खान, अब्दुल्ला नागौरी, डॉ. शाहिद अख्तर आदि सहित कार्यकर्त्ता उपस्थित रहे।

यह जानकारी जिला महामंत्री सलीम अहमद ने दी।

मोदी सरकार में 3 पूर्व सीएम का बढ़ गया कद

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी नई मंत्रिपरिषद के साथियों के बीच कामकाज और उनके विभागों का बंटवारा कर दिया है। हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर का कद बढ़ाते हुए उन्हें दो भारी भरकम मंत्रालयों का जिम्मा सौंपा गया है।

खट्टर को ऊर्जा और शहरी विकास मंत्रालय की जिम्मेदारी सौंपी गई है। इसी तरह मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का भी कद बढ़ा दिया गया है। उन्हें ग्रामीण विकास मंत्रालय और कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय का जिम्मा सौंपा गया है।

सरकार में नंबर दो राजनाथ सिंह पहले की तरह ही फिर से रक्षा मंत्री बनाए गए हैं। इसके साथ ही नंबर तीन पर रहने वाले अमित शाह को फिर से गृह और सहकारिता मंत्रालय की जिम्मेदारी सौंपी गई है। संगठन से सरकार में आए भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा का भी कद बढ़ा दिया गया है। उन्हें भी इस बार दो बड़े मंत्रालय का जिम्मा सौंपा गया है। उन्हें स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के अलावा रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय भी दिया गया है। निर्मला सीतारमण को वित्त के अलावा कंपनी मामलों का भी मंत्री बनाया गया है, जबकि एस जयशंकर पहले की ही तरह विदेश मंत्रालय का जिम्मा संभालेंगे।

जिन अन्य मंत्रियों को दो-दो हैवी वेट विभाग दिए गए हैं, उनमें पिछली सरकार में रेल मंत्री रहे अश्विनी वैष्णव भी शामिल हैं। उन्हें इस बार तीन-तीन मंत्रालयों का जिम्मा सौंपा गया है। पहले की ही तरह वैष्णव रेल और आईटी मंत्रालय देखते रहेंगे। इस बार उन्हें सूचना-प्रसारण मंत्रालय का भी जिम्मा सौंपा गया है। बिहार में जेडीयू कोटे से मंत्री बने राजीव रंजन उर्फ लल्लन सिंह को भी दो-दो मंत्रालय का जिम्मा सौंपा गया है। उन्हें पंचायती राज और पशुपालन, डेयरी एवं मत्स्यपालन विभाग दिया गया है।

कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री और जेडीएस नेता एचडी कुमारस्वामी को भी दो बड़े मंत्रालय दिए गए हैं। उन्हें इस्पात और भारी उद्योग मंत्रालय दिया गया है। हालांकि, बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री और हम नेता जीतनराम मांझी को MSME मंत्रालय दिया गया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने वीरेंद्र कुमार को सामाजिक कल्याण और अधिकारिता मंत्रालय, ज्योतिरादित्य सिंधिया को दूरसंचार और पूर्वोत्तर विकास, गजेंद्र सिंह शेखावत को पर्यटन और संस्कृति मंत्रालय, प्रह्लाद जोशी को उपभोक्ता मंत्रालय और अक्षय ऊर्जा मंत्रालय, किरेन रिजिजू को अल्पसंख्यक और संसदीय कार्य मंत्रालय और मनसुख मांडविया को युवा एवं खेल मंत्रालय और श्रम मंत्रालय का जिम्मा सौंपा गया है। माना जा रहा है कि जिन नेताओं ने चुनावों में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया है, उनका कद बढ़ाकर उन्हें इनाम दिया गया है। इसके अलावा कुछ मंत्रियों को पिछली सरकार में किए कामकाज का इनाम मिला है, जबकि आगामी विधानसभा चुनावों को ध्यान में रखते हुए भी कुछ का कद बढ़ाया गया है। खट्टर सभी पैमानों पर खरे उतर रहे हैं।

चुनाव हारने वाले बन गए मंत्री, जीतकर भी कैबिनेट से बाहर

लोकसभा चुनाव में एनडीए के बहुमत के बाद नरेंद्र मोदी ने तीसरी बार प्रधानमंत्र पद की शपथ ले ली। उनके साथ ही 30 कैबिनेट मंत्रियों ने शपथ ली है। उनके अलावा मोदी सरकार 3.0 में 36 राज्य मंत्री और पांच मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने हमेशा की तरह इस बार भी चौंका दिया है। दरअसल पीएम मोदी के मंत्रिमंडल में ऐसे नेता को भी जगह मिली है जो अपनी सीट से चुनाव हार गया। वहीं हमीरपुर से बड़ी जीत दर्ज करने वाले और मोदी सरकार 2.0 में मंत्री रहे अनुराग ठाकुर को भी बाहर रखा गया है।

मोदी 3.0 में किस बात ने किया हैरान

अनुराग ठाकुर मोदी सरकार 2.0 का एक बड़ा चेहरा था। उनके पास खेल मंत्रालय और सूचना प्रसारण मंत्रालय की जिम्मेदारी रह चुकी थी। 2019 में उन्हें राज्य मंत्री के तौर पर शपथ दिलाई गई थी। वहीं 2021 में उनका प्रमोशन किया गया और कैबिनेट मंत्री बना लिया गया। उन्हें सूचना प्रसारण मंत्रालय की जिम्मेदारी दे दी गई। एनडीटीवी की रिपोर्ट में बीजेपी सूत्रों के हवाले से कहा गया है कि जेपी नड्डा को कैबिनेट में लाने के लिए अनुराग ठाकुर को बाहर रखा गया है। जेप नड्डा भी हिमाचल प्रदेश के कोटे से मंत्री बने हैं। ऐसे में हिमाचल से दो कैबिनेट मंत्रियों को लेना मुश्किल था।

चुनाव हारे पर मोदी मंत्रिमंडल में जगह

पंजाब की लुधियाना सीट से दो बार सांसद रह चुके रवनीत बिट्टू को भी इस बार मंत्रिपद की शपथ दिलाई गई है। लोकसभा चुनाव से ठीक पहले ही वह कांग्रेस से बीजेपी में शामिल हुए थे। लुधियाना की सीट पर उन्हें अमरिंदर राजा वडिंग के सामने हार का सामना करना पड़ा। अब उन्हें छह महीने के अंदर राज्यसभा या फिर लोकसभा में जाना है। बिट्टू पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री बेअंत सिंह के पोते हैं। 1999में बेअंत सिंह की खालिस्तानी हमले में हत्या कर दी गई थी।

जॉर्ज कुरियन ने भी मंत्री पद की शपथ ली है। वह केरल में बीजेपी के महासचिव हैं। वहीं वह किसी भी सदन में नहीं हैं। पेशे से वकील रहे कुरियन लगभग तीन दशक से बीजेपी में हैं। वह पार्टी के अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ में कई पदों पर रह चुके हैं। इससे संकेत मिलता है कि बीजेपी अब दक्षिण में अपना जनमत बढ़ाना चाहती है और ईसाइयों में पकड़ मजबूत करना चाहती है।

रविशंकर प्रसाद को नहीं मिली मंत्रिमंडल में जगह

लगभग दो दशक से सांसद और बीजेपी के वरिष्ठ नेता रविशंकर प्रसाद को भी इस बार मंत्री पद की शपथ नहीं दिलाई गई है। इस बार भी उन्होंने बिहार की पटना साहिब सीट से जीत दर्ज की है। इसके अलावा पांच बार के सांसद राजीव प्रताप रूड़ी को भी मंत्री पद नहीं मिला है। वह तीसरी बार सारन सीट से चुना जीते हैं। मोदी मंत्रिमंडल में बिहार से आठ मंत्री शामिल हुएहैं। लेकिन अटल सरकार से नरेंद्र मोदी सरकार तक में शामिल रहे दो नामों को जगह नहीं दी गई।

एल मुरुगन ही मोदी सराकर 2.0 के ऐसे मंत्री हैं जिन्हें चुनाव हारने के बाद भी इस बार मोदी मंत्रिमंडल में जगह मिली है। वहीं स्मृति ईरान और राजीव चंद्रशेखऱ को चुनाव हारने के बाद मंत्रिमंडल से बाहर कर दिया गया। तमिलनाडु के पूर्व बीजेपी चीफ अन्नामलाई चुनाव हारने के बाद भी केंद्र सरकार में शामिल हैं। बीजेपी के वरिष्ठ नेता पुरषोत्तम रूपाला नरेंद्र मोदी को दोनों कार्यकालों के दैरान मंत्री रहे लेकिन इस बार उन्हें जगह नहीं दी गई। उन्होंने भी गुजरात की राजकोट सीट से बड़ी जीत दर्ज की है।

आजादी के बाद पहली बार, मुस्लिम मंत्री के बिना भारत सरकार

नरेंद्र मोदी का पीएम के तौर पर तीसरा कार्यकाल शुरू हो गया है और उन्होंने 72 मंत्रियों के साथ रविवार को शपथ ली। लेकिन इस समारोह के बाद से ही यह चर्चा तेज है कि मंत्री परिषद में एक भी मुस्लिम सदस्य को जगह नहीं मिली है। 18वीं लोकसभा के लिए हुए चुनाव में भाजपा से किसी मुस्लिम सदस्य को जीत भी नहीं मिली थी, लेकिन सरकार में गठबंधन सहयोगियों की ओर से भी किसी मुस्लिम नेता का प्रस्ताव नहीं आया। आजादी के बाद यह पहला मौका है, जब भारत सरकार में कोई भी मुस्लिम मंत्री नहीं है।

इससे पहले एनडीए की ही सरकारों की बात करें तो अटल बिहारी वाजपेयी के दौर में सैयद शाहनवाज हुसैन को टेक्सटाइल मिनिस्टर और नागर उड्डयन मंत्री के तौर पर शामिल किया गया था। वहीं मोदी सरकार के ही पहले के कार्यकालों में मुख्तार अब्बास नकवी मंत्री थे। उन्हें अल्पसंख्यक कल्याण मंत्रालय की जिम्मेदारी मिली थी। फिर उन्होंने 2022 में इस्तीफा दे दिया था और स्मृति इरानी को यह जिम्मेदारी मिली थी। लेकिन इस बार किसी भी मुस्लिम नेता को मंत्री परिषद में शामिल नहीं किया गया है, जो चर्चा का विषय है।

कुल 5 अल्पसंख्यक नेता बने हैं मोदी सरकार में मंत्री

हालांकि एक दिलचस्प तथ्य यह भी है कि मोदी मंत्री परिषद में कुल 5 नेता अल्पसंख्यक समुदाय के हैं। इन नेताओं में हरदीप सिंह पुरी और रवनीत सिंह बिट्टू हैं, जो सिख समुदाय से आते हैं। इसके अलावा रामदास आठवले और किरेन रिजिजू बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं। वहीं केरल से आने वाले जॉर्ज कुरियन ईसाई समुदाय के हैं। बता दें कि इन मंत्रियों में से रवनीत सिंह बिट्टू किसी भी सदन के सदस्य नहीं हैं। वह लोकसभी चुनाव में हार गए थे। वहीं जॉर्ज कुरियन ने चुनाव ही नहीं लड़ा था। माना जा रहा है कि पार्टी अब उन्हें राज्यसभा के रास्ते संसद भेजेगी। वह केरल में भाजपा के महासचिव भी हैं।

लोकसभा पहुंच कुल 24 मुस्लिम सांसद, ओवैसी की पार्टी के तीन

आमतौर पर कोई न कोई मुस्लिम समुदाय का नेता मंत्री बनता रहा है। ऐसे में इस बार के मंत्री परिषद पर सवाल उठाए जा रहे हैं। यही नहीं उमर अब्दुल्ला ने तो तुरंत ही कहा था कि यह मुस्लिम मुक्त एनडीए सरकार है। गौरतलब है कि इस बार लोकसभा में अलग-अलग दलों से कुल 24 मुस्लिम सांसद चुनकर पहुचे हैं। इनमें से तीन असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी AIMIM से ही हैं।

मोदी ने महत्वपूर्ण और भारी भरकम मंत्रालयों से दूर ही रखा है सहयोगी दलों को

नई दिल्ली। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के सहयोगी दलों के दम पर केन्द्र में तीसरी बार सरकार बनाने वाले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सहयोगी दलों को महत्वपूर्ण, संवेदनशील तथा भारी भरकम मंत्रालयों से दूर ही रखा है।

श्री मोदी ने सोमवार को मंत्रिपरिषद के सदस्यों के विभागों का बंटवारा किया जिसमें सभी शीर्ष और महत्वपूर्ण मंत्रालय भाजपा नेताओं को ही दिये गये हैं। उपर के शीर्ष पांच मंत्रालयों में कोई बदलाव नहीं किया गया है और इनकी जिम्मेदारी मोदी के दूसरे कार्यकाल वाले मंत्री ही संभालेंगे।

बंटवारे में जनता दल एस के कोटे से केबिनेट मंत्री बने एच डी कुमारस्वामी को भारी उद्योग और इस्पात मंत्री, हिन्दुस्तानी आवाम मोर्चा के जीतन राम मांझी को सूक्ष्म , लघु और मध्यम उद्यम मंत्री, जद यू के राजीव रंजन सिंह को पंचायती राज मंत्री और मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी, तेदेपा के राममोहन नायडू को नागरिक उड्डयन मंत्री और लोजपा के चिराग पासवान को खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री बनाया गया है। स्वतंत्र प्रभार वाले मंत्रियों में शिवसेना के जाधव प्रतापराव गणपतराव को आयुष और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जबकि रालोद के जयंत चौधरी को कौशल विकास और उद्यमिता के साथ शिक्षा मंत्रालय की जिम्मेदारी दी गयी है।

मोदी सरकार में मप्र से पांच मंत्री, शिवराज पहली बार बने केन्द्रीय मंत्री

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) का लगातार तीसरी बार राज्यारोहण हुआ जिसमें पिछली सरकार के अधिकांश वरिष्ठ मंत्रियों को स्थान देने के साथ राजग के घटक दलों के सात नये चेहरों को जगह दी गयी है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने राष्ट्रपति भवन के प्रांगण में आज शाम आयोजित एक भव्य समारोह में श्री मोदी और उनकी मंत्रिपरिषद के 71 सदस्यों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलायी। मंत्रिमंडल में जम्मू कश्मीर से लेकर केरल तथा गुजरात से लेकर अरुणाचल प्रदेश तक राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों को स्थान दिया गया है।

श्री मोदी (73) 1962 के बाद ऐसे पहले प्रधानमंत्री हैं जिन्होंने दो कार्यकाल पूरे करने के बाद लगातार तीसरी बार सरकार बनाने में कामयाबी पायी है। मंत्रिमंडल में भाजपा के चार वरिष्ठ नेताओं-राजनाथ सिंह, नितिन गडकरी, अमित शाह और जगत प्रकाश नड्डा को शपथ दिलायी गयी है जो पार्टी के अध्यक्ष की जिम्मेदारी निभा चुके हैं।

श्री मोदी ने शुक्रवार को राष्ट्रपति से नियुक्ति पत्र प्राप्त करने के बाद मीडिया से बातचीत में संकेत दे दिया था कि उनकी तीसरी टीम में अनुभवी साथियों को बरकरार रखा जाएगा। नयी सरकार में तेलुगु देशम पार्टी और जनता दल यूनाइटेड को एक एक कैबिनेट और एक एक राज्य मंत्री का पद दिया गया है।

जनता दल सेकुलर के प्रमुख एवं कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री एच डी कुमारस्वामी तथा हिन्दुस्तानी अवामी मोर्चा के नेता एवं बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जीतनराम मांझी को कैबिनेट मंत्री बनाया गया है। मध्य प्रदेश से पांच सांसदों को केन्द्र में मंत्री बनाया गया है। इनमें शिवराज सिंह चौहान, ज्योतिरादित्य सिंधिया, डॉ. वीरेन्द्र कुमार खटीक, सावित्री ठाकुर और दुर्गादास उईके शामिल हैं। विदिशा सीट से सांसद चुने गए शिवराज सिंह चौहान पहली बार केंद्रीय मंत्री बने हैं। उन्होंने कैबिनेट मंत्री के रूप में शपथ ली है। वहीं ज्योतिरादित्य सिंधिया को दूसरी बार और डॉ. वीरेंद्र कुमार खटीक को लगातार तीसरी बार मोदी सरकार में कैबिनेट मंत्री बनाया गया है। उन्होंने भी कैबिनेट मंत्री के तौर पर पद और गोपनीयता की शपथ ली है। मध्यप्रदेश से केंद्र में कैबिनेट मंत्रियों में शिवराज और सिंधिया ओबीसी वर्ग से आते हैं, जबकि डॉ. वीरेंद्र कुमार एससी वर्ग से हैं। शिवराज छठवीं बार और सिंधिया पांचवीं बार सांसद बने हैं, जबकि डॉ. वीरेंद्र कुमार आठवीं बार के सांसद हैं।

इसके अलावा मध्य प्रदेश के बैतूल से सांसद दुर्गादास उईके और धार से सांसद सावित्री ठाकुर भी पहली बार केंद्र में मंत्री बनाया गया है। इन दोनों ने राज्य मंत्री के रूप में पद एवं गोपनीयता की शपथ ली। दुर्गादास उईके और सावित्री ठाकुर लगातार दूसरी बार अपने-अपने क्षेत्रों से निर्वाचित हुए हैं। आज के शपथ ग्रहण समारोह में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के किसी भी नेता को मंत्रिमंडल में जगह नहीं मिली है। सूत्रों के अनुसार राकांपा के अंदर की असहमतियों के कारण कोई नाम तय नहीं हो पाया। नयी मंत्रिपरिषद में पिछली सरकार में मंत्री रहे 21 नाम नहीं हैं जिनमें श्री अनुराग सिंह ठाकुर, स्मृति ईरानी, पुरषोत्तम रूपाला, राजीव चंद्रशेखर, नारायण राणे, साध्वी निरंजन ज्योति, महेन्द्र नाथ पांडेय, जनरल वी के सिंह, अश्विनी चौबे, अर्जुन मुंडा, अजय मिश्रा टेनी और आर के सिंह प्रमुख हैं। चुनाव से पहले पंजाब में कांग्रेस छोड़ कर भाजपा में आये रवनीत सिंह बिट्टू को आनंदपुर साहिब सीट से पराजित होने के बावजूद मंत्रिपरिषद में स्थान दिया गया है।

मंत्रिपरिषद में हरियाणा से पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल सहित तीन मंत्री बनाये गये हैं। जबकि पूर्वी दिल्ली से निर्वाचित हर्ष मल्होत्रा को भी राज्य मंत्री पद की शपथ दिलायी गयी है। केरल की त्रिशूर सीट से निर्वाचित अभिनेता सुरेश गोपी तथा केरल भाजपा के महासचिव जार्ज कुरियन को राज्य मंत्री बनाया गया है। तेलंगाना प्रदेश भाजपा के पूर्व अध्यक्ष बंडी संजय कुमार को भी राज्यमंत्री बनाया गया है शपथ लेने वाले केबिनेट मंत्रियों में सर्वश्री राजनाथ सिंह,अमित शाह, नितिन गडकरी, जगत प्रकाश नड्डा, शिवराज सिंह चौहान, निर्मला सीतारमण, डॉ एस जयशंकर, मनोहर लाल, एच डी कुमारस्वामी,पीयूष गोयल, धर्मेन्द्र प्रधान, जीतन राम मांझी, राजीव रंजन सिंह, सर्वानंद सोनोवाल,वीरेन्द्र कुमार, राम मोहन नायडू, प्रह्लाद जोशी, जुएल ओरांव, गिरिराज सिंह, अश्विनी वैष्णव, ज्योतिरादित्य सिंधिया, भूपेन्द्र यादव,गजेन्द्र सिंह शेखावत, अन्नपूर्णा देवी, किरेन रिजिजू, हरदीप सिंह पुरी, डा मनसुख मांडविया, जी किशन रेड्डी, चिराग पासवान, सी आर पाटिल शामिल हैं। राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार के रूप में शपथ लेने वालों में राव इंद्रजीत सिंह, जितेन्द्र सिंह, अर्जुन राम मेघवाल, प्रतापराव गणपत राव जाधव और जयंत चौधरी शामिल हैं।

राज्य मंत्री के रूप में शपथ लेने वालों में जितिन प्रसाद, श्रीपद यशो नाइक, पंकज चौधरी, कृष्णपाल, रामदास अठावले, रामनाथ ठाकुर, नित्यानंद राय, अनुप्रिया पटेल, वी सोमन्ना, डॉ. चंद्रशेखर पेम्मासानी, प्रो. एस पी सिंह बघेल, शोभा करंदलाजे, कीर्तिवर्धन सिंह, बी एल वर्मा, शांतनु ठाकुर, सुरेश गोपी, डॉ. एल मुरुगन, अजय टम्टा, बंडी संजय कुमार, कमलेश पासवान, भागीरथ चौधरी, सतीश चंद्र दुबे, संजय सेठ, रवनीत सिंह बिट्टू, दुर्गादास उइके, रक्षा खडसे, सुकांत मजूमदार, सावित्री ठाकुर, तोखन साहू, राजभूषण चौधरी, भूपति राजू श्रीनिवास वर्मा, हर्ष मल्होत्रा, नीमूबेन बम्भानिया, मुरलीधर मोहोल, जॉर्ज कुरियन और पबित्र मार्गरिटा हैं। इससे पहले श्री मोदी ने आयोजन स्थल पर पहुंचते ही हाथ जोड़कर तथा झुककर उपस्थित लोगों का अभिवादन स्वीकार किया।

शपथ लेने के लिए जैसे ही श्री मोदी का नाम पुकारा गया तो उपस्थित जनसमुदाय की हर्षध्वनि पूरे राष्ट्रपति भवन प्रांगण में गूंज गयी।

जनसमुदाय में अपने अपने क्षेत्र के मंत्रियों के शपथ लेने में लोगों का हर्षध्वनि से अभिनंदन करते रहे। इस मौके पर उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़, प्रधान न्यायाधीश डी वाई चन्द्रचूड़, नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्पकमल दहल प्रचंड, बंगलादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना, भूटान के प्रधानमंत्री शेरिंग तोब्गे, श्रीलंका के राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे, मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू, सेशेल्स के उप राष्ट्रपति अहमद अफीफ और मॉरीशस के प्रधानमंत्री प्रविन्द जगन्नाथ, राजनयिक एवं अनेक गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे। करीब पौने तीन घंटे बाद शपथ ग्रहण कार्यक्रम समाप्त होने के बाद विदेशी मेहमान राष्ट्रपति द्वारा आयोजित राजकीय भोज में शामिल हुए।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि विकास के कारण भी हार हो सकती है?

अर्थात, कोई नेता या पार्टी इसीलिए हार जाए क्योंकि उसने विकास किया? सुनने में ये अजीब और हास्यास्पद जरूर लगे। लेकिन, अपने भारत के संदर्भ में ये बिल्कुल सच है। असल में इस चुनाव से कुछ पहले मेरा देवघर जाना हुआ था। देवघर मतलब बाबा बैद्यनाथ की नगरी जो कि, हमारे 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। वो गोड्डा लोकसभा क्षेत्र में आता है और वहाँ के वर्तमान सांसद तेजतर्रार निशिकांत दुबे हैं। जिन्होंने, देवघर में AIMS से लेकर एयरपोर्ट और नए रेलवे स्टेशन आदि ढेरों काम करवाए। और, चुनाव से कुछ दिन पहले वहाँ प्रधानमंत्री मोदी जी गए थे और उन्होंने वहाँ बाबा बैद्यनाथ मंदिर में पूजा करने के उपरांत उस मंदिर के जीर्णोउद्धार के लिए 700 करोड़ देने का ऐलान किया। बस, इसी बात से वहाँ मंदिर के आसपास के लोग बहुत नाराज हो गए कि पहले तो एयरपोर्ट और एम्स और, अब मंदिर का जीर्णोद्धार हम भाजपा को वोट देबे नहीं करेंगे। न भाजपा सत्ता में आएगी और न मंदिर का जीर्णोद्धार होगा। मेरे ये समझाने पर कि अरे बाबा मंदिर का जीर्णोद्धार होगा तो यहाँ और भी ज्यादा श्रद्धालु आएंगे जिससे पूरे देवघर शहर की आमदनी बढ़ेगी। क्योंकि, लोग आएंगे तो यहीं होटल में रुकेंगे, कुछ खाएंगे, कुछ खरीदेंगे, पूजा पाठ करेंगे और दान दक्षिणा भी देंगे। लोग, मुझसे ही लड़ने लगे कि अगर मंदिर का जीर्णोउद्धार हुआ आसपास के सभी घर/दुकान टूटेंगे। सड़कें चौड़ी होंगी। फुटपाथ पर लाइट्स लगेंगे तो गरीब दुकान कहाँ करेंगे? आदि आदि इतनी समस्याएँ गिनवाने लगे कि अंततः, मैंने पूजा करके चुपचाप वापस हो जाना बेहतर समझ और, अभी सुनने में आया कि वहाँ के सांसद साहब (भाजपा) भी हारते-हारते बचे हैं। तो, इस व्यक्तिगत एक्सपीरिएंस के बाद मुझे अच्छे से समझ आ गया कि आखिर लोग चाहते क्या है? और, क्यों वाराणसी से लेकर अयोध्या तक में भाजपा कहीं हार गई तो कहीं हारते-हारते बची है। कहते हुए तो अच्छा नहीं लग रहा है लेकिन, एक बार पूर्व प्रधानमंत्री नरसिंह राव ने कटेशरों के संबंध में कहा था। अरे, वे गटर में पड़े रहना चाहते हैं तो रहने दो न। काहे उन्हें वहाँ से निकालने का प्रयास कर रहे हो। अगर तुम उन्हें गटर से निकालने का प्रयास करोगे तो वे तुम्हीं से रूष्ट होकर चुनाव में हरा देंगे।

हालाँकि, नरसिंह राव ने ये उक्ति कटेशरों के लिए कही थी। लेकिन, अब लगता है कि उनकी ये उक्ति इस खेमे के लिए भी पूरी तरह सच है।

सूत्रों के अनुसार मोदी जी बनारस भी इसीलिए हारते हारते बचे हैं क्योंकि उन्होंने काशी विश्वनाथ मंदिर को गंदी-बजबजाती नालियों और तंग गलियों से मुक्त करवा दिया। उन्होंने, काशी का कायाकल्प करते हुए वहाँ गंगा घाट पर क्रूज और बोट चलवा दिए। जिससे कि, वहाँ के पंडित और मल्लाह नाराज हो गए। पंडित इसीलिए नाराज हो गए क्योंकि मोदी जी ने मंदिर के पास से सभी अवैध और कब्जा की गई जमीन से उन्हें हटा दिया (बामय मुआवजा)। जबकि, मल्लाह इसीलिए नाराज हो गए क्योंकि पुरानी काशी में अपने टूटे-फूटे बोट से थोड़ा बहुत कमा लेते थे। लेकिन, क्रूज और आधुनिक बोट आने से उनकी एकछत्रता खत्म हो गई। (सिर्फ एकछत्रता ही खत्म हुई कमाई नहीं। क्योंकि, पहले जहाँ रोजाना 200 लोग बनारस जाते थे तो अब 2000 लोग रोज जाते हैं। इसी तरह पहले जहाँ उनकी बोट पर पहले 100 लोग बैठते थे अब 150-200 लोग बैठते हैं)।

इसीलिए, मल्लाह भी भाजपा से बहुत नाराज हैं जिनकी संख्या ढाई लाख से लगभग बताई जाती है। शायद, ऐसा ही कुछ अयोध्या के बारे में भी हो।

क्योंकि चौड़ी सड़क, एयरपोर्ट तक के लिए कनेक्टिविटी, पार्क आदि के लिए जो तोड़-फोड़ हुई होगी इससे वहाँ के लोग नाराज होंगे। कुल मिलाकर हम हिंदुओ की तरफ से संदेश ये है कि देखो, हमको विकास-फिकास नहीं चाहिए। हमको नाली में पड़े रहने में ही सुख है। तथा, हमें। गंदी बजबजाती नालियों, अतिक्रमित संकरी गलियों और टूटे फूटे मंदिरों (अगर मंदिर की जगह टेंट रहे तो और भी उत्तम) में ही आस्था नजर आती है। इसीलिए, इन्हें बदलने की कोशिश मत करो। बस, हमको 400 रुपया में गैस सिलिंडर, 60 रुपया लीटर पेट्रोल और 25 रुपया किलो प्याज देते रहो हम उसी में खुश हैं। और हाँ...साल में दो चार गो सरकारी नौकरी (चपरासी, किरानी, मास्टरी आदि) का वैकेंसी निकालते रहो....100-200 यूनिट बिजली फ्री देते रहो। और, देखो हम आपको कैसे भर-भर के वोट देते हैं। लेकिन....अगर कहीं विकास-फिकास की बात की तो, फिर इस बार प्रधानमंत्रियों को अपना सीट बचाना मुश्किल हो जाएगा समझे।

बहुत देर हो जाए उससे पहले ही इसे रोकना पड़ेगा

मैं कई दिन से देख रहा था की मेरे एक छोटे से शहर में और 1 किलोमीटर के एरिया में कम से कम 4 ऐसे छोटी दुकानें और कैफे खुले हैं जो ये खाना देते हैं जिन्हे हम फास्ट फूड कहते हैं और मजे के बात ये है की इन सभी रेस्टुरेंट और कैफे के मेनू सेम थे प्राइस भी बराबर थे और इसमें 4 5 तरह के पिज्जा, 3 4 तरह के बर्गर रैप रोल और फ्रेंच फ्राइज थे।

मेरे घर बच्चे आए थे तो सोचा यही कहीं से लेते हैं और घुसा दुकान में, और जबतक वो फ्रेंच फ्राई बना रहा था तब तक मैं खड़ा था। देखा एक बड़े फ्रीजर में से पहले से कटे आलू निकाला और उसे तेल में डाल दिया, मैने बोला ताजा नही काटते क्या उसने बोला अरे नही ये कटा कटाया आता है बस फ्राई कर के दे दो मैंने बोला ताजा आलू भी तो तुरंत काट सकते हो तो उसने बोला ये आलू अलग है सस्ता होता है उसे प्रोसेस कर के ऐसा बनाया जाता हैं की कितने भी गर्म तेल में डालें ये एकदम गोल्डन होते हैं दिखने में अच्छे और खाने में कुरकुरा फिर पिज़्ज़ा की बारी आती है, तो देखा पहले से बना बनाया ब्रेड लिया और उसपे रेडीमेड souce डाली फिर लिक्विड चीज, फिर प्रोसेस चीज डाल दी और बेक कर के दे दिया।

मैने बोला यार सब रेडीमेड है कुछ खुद नहीं करना पढ़ता। तो मुंह में गुटका दबाए वो बोलता है नहीं सारी व्यवस्था टंच है सारा माल कंपनी का है। आइए दिखाते हैं, जब देखा तो तो दिमाग घूम गया था। 1 किलो के पैकेट जिसमे पिजा souce मेयोनीज, चीज आदि थे और वो सब राइस ब्रायन ऑयल कॉटन सीड ऑयल के मिश्रण से मिले थे। टमाटर से बनने वाले souce में टमाटर pulp मात्र 20 प्रतिशत था और बाकी 80 त्न में oil प्रिजर्वेटिव रंग आर्टिफिशियल फ्लेवर थे। ऐसे ही फ्रेंच फ्राई के आलू भी महीना भर पहले डीप फ्रीज किए गए थे। प्रोसेस कर के उसमे से स्टार्च निकाला गया था, और काफी ज्यादा मात्रा में खराब ना होने वाली दवाई पड़ी थी। क्यों की आलू को यदि काट कर रख दें तो तुरंत ऑक्सीजन से क्रिया कर के काला पड़ने लगता है। लेकिन ये आलू महीनो बाद भी वैसा ही है। अब सोचिए जो बच्चे हर दूसरे दिन ये जहर खा रहे हैं उनके स्वास्थ्य पर क्या असर पड़ेगा?

पेपर में न्यूज आती है दिल्ली में 8 में पढ़ने वाले लड़के की हार्ट attak se maut लेकिन कभी सुना है की कोई गरीब या गांव में रहने वाले लड़के को ऐसा हुआ है। लोग वैक्सीन को दोष दे रहे थे, लेकिन मुझे लगता है सच्चाई कुछ और है इसे बेचने वाले खुद नही जानते की खाने के नाम पर वो जहर बेच रहे हैं, वो तो बस चंद मुनाफे और अपने परिवार का पेट पालने के लिए ये कर रहे, और उन्हें भी पता है इसकी डिमांड है। क्योंकि हर कैफे के बाहर स्कूल में पढ़ने वाले और कॉलेज जाने वाले बच्चे खड़े होते हैं लाइन लगा कर। तो ये बच्चो के पैरेंट्स की जिम्मेदारी है की वो। इस जहर के बारे में अपने बच्चो को बताएं। नही तो यकीन मानिए आपके बच्चो के लिए स्थिति बहुत ही बदतर और भयावह होने वाली है। इसे ज्यादा से ज्यादा लोगो तक शेयर करें जितना जल्दी हो सके क्यों की ऐसी खाने वाली पोस्ट रिपोर्ट मार कर डिलीट करवा दी जाती है। जिससे ये जहर बनाने वालो का धंधा चलता रहे। क्या आप के शहर में भी इधर बीच काफी ज्यादा ये कैफे रिस्चरेंट खुले हैं?

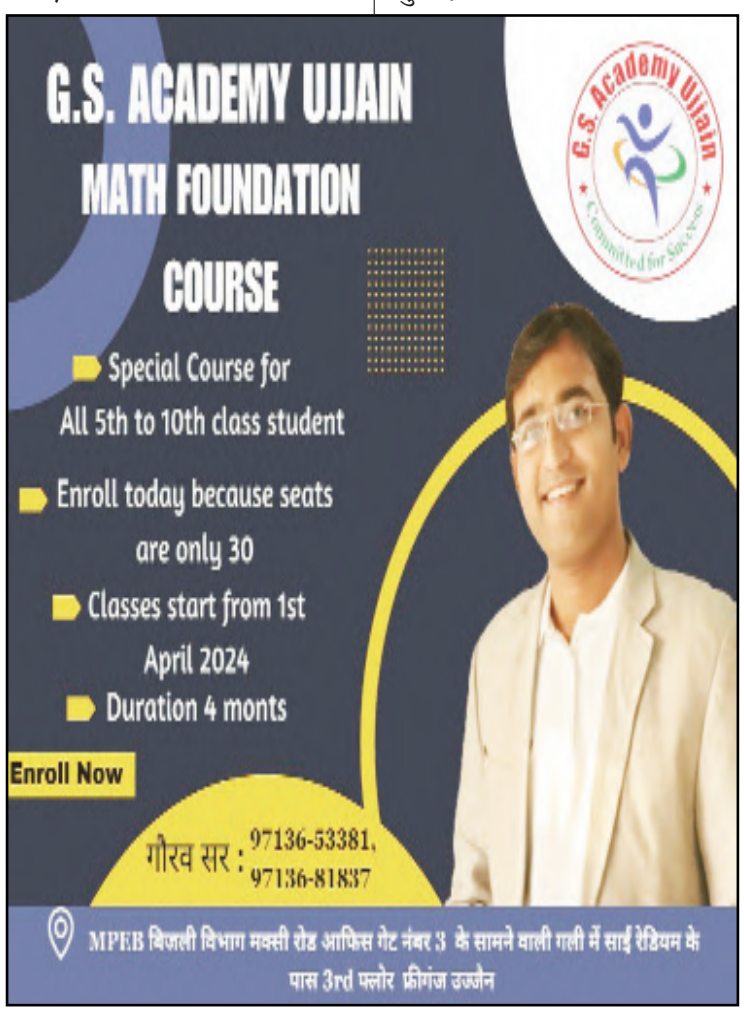

स्वताधिकारी/प्रकाशक मनमोहन शर्मा के लिये साप्ताहिक उज्जैन टाइम्स 110, तिरुपति एवेन्यू, होटल नत्रक्ष के पीछे, पंचक्रोशी मार्ग, उज्जैन (म.प्र.) से प्रकाशित एवं ज्योति ट्रेडर्स एवं प्रिन्टर्स न्यू रोड़, उज्जैन से मुद्रित।
● प्रधान सम्पादक : मनमोहन शर्मा मोबा. 9827233734 manmohan680@gmail.com (सभी वाद-विवादों का न्याय क्षेत्र उज्जैन रहेगा)। (म.प्र. शासन से 01-04-1997 से समाचार पत्र विज्ञापनों हेतु अनुमोदित)